

Written by कुमार सौवीर
Monday, 18 June 2018 14:37

: □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□-□□□□□ : □□□□□□ □□
□□□ □□□□□□□□□□□-□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ : □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□
□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ : □□□□□ □□□□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ :



□□□□□ □□□□□

□□□□ : आप किसी भी बेईमान के पास जाइये। उसके आसपास चलाइलुओ-तेलांडुओ की बाक्यदा पौज दखिगी, जबकि ईमानदार लोगों के चेहरे से तुनुकमजिजी टप् प-टप् प चूती-टपक्ती रहती है। जनि हैं औसत क्षमता-बुद्धि है, वे हमेशा प्रफुल्लति दखिंगे। दौड़-दौड़ कर कम करने-कराने में महारत होगी उनमें। उनका क औरा या प्रभा-मंडल होगा। उनके आसपास लोगों की भीड़ होगी, आने-जाने वाले के पुकरेंगे, लपिटेंगे, सम् मान देंगे। तनकिबात पर भी वे सब कमत हो जाते हैं बेईमान, साथी के संकट देखते ही वे कजुट हो जाते हैं। भले वो ईमानदार हो या बेईमान। जबकि जनि हैं आप क्षीर-वविकी यानी पढ़े-लिखे मानते हैं, वे अक् सर अक् खड़, ऐंटू, घमण डी दखिंगे। अक् सर तो दूसरों के गरयाते रहेंगे। गर्मजोशी केसों दूर, दूसरों के ओर अपना हाथ ऐसे सौपेंगे, कि वयिग्रा तक अपनी असफलता पर शर्मदा हो जा। सरिफ ज्ञान बघारेंगे, तुनुकमजिजी टप् प-टप् प चूती-टपक्ती रहेगी।

आज यू ही क बहस में शामिल हो गया मैं। प्रश्न न था कि नीर-क्षीर वविकी होना ।। किसी से अप्रभावति होना, आप को अकेला व नीरस बना सकता है? प्रश्न न के साथ ही समाधान भी देने के केशशि की थी अवध बार । सोसयिशन के पूर्व महामंत्री आरडी शाही ने। मैंने भी अपना ज्ञान छौक कि नीर-क्षीर वविकी होने का अर्थ कभी भी नीरस और अकेला क्दापि नहीं हो सकता। जो तलछट तक के मरम के समझने गया है, वह वापसी में अगर अकेला और नीरस बन गया, तो मैं नोटरी प्रमाणपत्र जारी करवा सकता हूँ कि ऐसा व व्यक्ति रेन-कोट पहन कर स् नान करने के केशशि करता रहा है, और इस तरह अपने ऐसे स् नान-क्म से शुद्ध होने का भरम दूसरों पर थोपता रहा है। ऐसा व व्यक्ति नीर-क्षीर वविकी कैसे हो सकता है? और अगर ऐसा दावा करने वाले ने स् वप् न में भी क्षीर के नहीं अपनाया, केवल भयभीत ही रहा है। ऐसे में तो दर्प-घमण ड की ही चट्टानी-फसल ही होगी। नीर-क्षीर वविकी तो केवल वही हो सकता है जो जल के क्पा-क्पा-परमाणुओं तक पहुंचने के ली। उत् सुकहो, और उसी जजिजासा भाव में वहां गहरे तक पहुंच चुक हो। और यह अच् छी तरह समझ चुक हो कि वह नीर-क्षीर के ऊपर नहीं, उसके जैसे असंख य तत् वों में से क है। ऐसे व व्यक्ति सरल, प्राणवान, जीवन् त और सतत जजिजासा होगा, दर्प के वपिरीत धरुव पर।

Written by कुमार सोवीर
Monday, 18 June 2018 14:37

